

द्वात्रिंशिका

DVAATRINSHIKAA

आ. समन्तभद्र · ४वीं शती · अभिलेख १९/९०

आ. समन्तभद्र

→

श्री पात्र केसरी स्वामी

संक्षिप्त परिचय

बत्तीस-बत्तीस पद्यों की स्तुति-रचनाओं की प्रतिष्ठित परम्परा का ग्रन्थ — स्तुति के माध्यम से तत्त्व-निरूपण।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

द्वात्रिंशिका — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक १९ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. समन्तभद्र; रचना-काल ४वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ६८) के अनुसार इनका समय १२०–१८५ है। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "आप्तमीमांसा/आदि अनेकग्रन्थ" उल्लिखित है। इसी लेखनी से रत्नकरण्ड श्रावकाचार, आप्तमीमांसा, युक्त्यनुशासन, स्वयम्भूस्तोत्र, देवागमस्तोत्र, जिनशतक भी इस सूची में सम्मिलित हैं।

इसी लेखनी से

रत्नकरण्ड श्रावकाचार

आप्तमीमांसा

युक्त्यनुशासन

स्वयम्भूस्तोत्र

देवागमस्तोत्र

जिनशतक

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗

जैनकोश ↗

Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति १९ — मूल छायाचित्र

